



भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ सत्य प्रकाश ,

(इतिहास विभाग), डॉ बी आर अम्बेडकर जन्मशताब्दी महाविद्यालय धनसारी, अलीगढ़

मोबाइल नंबर 9719699128

ई-मेल: satyaanandvibhu123@gmail.com

सारांश

प्राचीन भारतीय संस्कृति विश्व की प्रमुख संस्कृतियों में विशेष और समृद्धशाली थी जिसमें विभिन्नताओं में एकता के दर्शन पाए जाते हैं। भारतीय संस्कृति का प्रारंभ प्रागैतिहासिक काल से आरंभ हुआ मानव की दैहिक और मानसिक स्थिति आदिकाल में भी वैसी ही थी जैसी आज। मानव जीवन एक अनिवार्य द्वेत में ग्रस्त है। तम और प्रकाश के समान उसमें सत्य और मिथ्या के सम्मिश्रण से अनुभव का इंद्रधनुष विस्तारित हुआ है। प्रागैतिहासिक संस्कृतियों में अनेक विधि जीवन चर्चाएं और उनके उपयुक्त संगठन निर्मित हुए थे। विश्व के अन्य देशों की संस्कृतियां उतनी विकसित नहीं जितनी भारतीय संस्कृति क्योंकि भारतीय संस्कृति समय की धारा के साथ निरंतर गतिमान है। भारतीय संस्कृति आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अपनी जीवन्तता स्थापित किए हुए हैं। संस्कृति शब्द का अर्थ मानव के मन या आत्मा के विशुद्ध करने वाली सम्यक कृति या चेष्टा है। ऐसे विचार व व्यवहार जिनमें मानव जीवन सुंदर परिष्कृत तथा सुसंस्कृत बनाते हैं। आत्मोन्नति के लिए गतिशील हो यही संस्कृति की विशेषता है। मानव की लौकिक, पारलौकिक सर्वाभ्युदय के अनुकूल अचार विचार ही संस्कृति है। संस्कृति तथा सभ्यता एक दूसरे के पूरक समझ जाते हैं। विद्वान मानते हैं कि भारतीय संस्कृति आकाश की तरह विशालकाय व समुद्र की तरह अपार है। यह ज्ञान से पवित्र किसी को नहीं मानती। यह मानव जाति के सर्वांगीण कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति का विकास क्रम पांच काल खण्डों में बांटा गया है। भारतीय संस्कृति में धर्म की प्रधानता, वर्ण व्यवस्था, त्याग और तपस्या को महत्व, सत्य व अहिंसा पर भरोसा दिखाने के साथ-साथ कर्म, पुनर्जन्म तथा मोक्ष या निर्वाण का मुख्य स्थान है। मानव-जीव अपने-अपने कर्म के अनुसार विभिन्न योनियों में जन्म लेता है। जो उत्पन्न हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। जो मर चुका है उसका जन्म लेना भी आवश्यक है। माता-पिता और गुरु का सम्मान करना सिखाया



जाता है। इनका मानव हमेशा ऋणी रहता है। सत्य बोलना प्राणी के लिए तप है। वैश्विक मानव समाज व लोक की स्थिति इसी सत्य पर टिकी है।

मूल शब्द .

प्राचीन भारतीय संस्कृति, सत्य, अहिंसा, त्याग, पुनर्जन्म, लौकिक-पारलौकिक, आत्मोन्नति इत्यादि

उद्देश्य

- 1- प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल स्वरूप को ज्ञात करना।
- 2- भारतीय संस्कृति के लोककल्याणकारी स्वरूप का अध्ययन करना।
- 3- भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का अध्ययन करना।
- 4- मानव समाज निर्माण में प्राचीन भारतीय संस्कृति के महत्व को ज्ञात करना।
- 5- प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

किसी भी शोध और अनुसंधान के लिए तथ्यों का संकलन अति आवश्यक और महत्वपूर्ण होता है। तथ्यों के संकलन के साथ ही उनके विश्वसनीय एवं सार्थक होना भी जरूरी है। तभी शोध या अनुसंधान में वास्तविकता उभर कर सामने आती है। इस शोध आलेख को तैयार करने में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग कर ऐतिहासिक, तुलनात्मक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधियों का बखूबी किया गया है।

प्रस्तावना

दुनिया में मानव एक अनोखा और अद्भुत प्राणी है। वह अनोखा इसलिए है क्योंकि वह संस्कृति का अधिकारी तो है ही साथ ही उसका निर्माता भी है। संस्कृति ही है जो मानव समाज को पशु समाज से पृथक् कर देती है। मानव के पास से उसकी संस्कृति को छीन लीजिए जो कुछ शेष रहेगा वह निश्चित ही मानव श्रेणी का नहीं एक प्रकार का पाशुविक प्रवृत्ति का होगा। संस्कृति लौकिक और पारलौकिक आवश्यकताओं की एक व्यवस्था और मानवीय मूल्य तथा क्रियाओं को पूरा करने की एक व्यवस्था है। संस्कृति मानव को मानसिक, बौद्धिक, एवं शारीरिक रूप से मजबूत बनाती है। संस्कृति की प्रकृति वास्तव में सामाजिक होती है। संस्कृति के अभाव में व्यक्ति का जीवन पशुवत होता है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का विशेष गुण है कि मानव को सभ्य और सुसंस्कृति बनाकर उत्तम मानव समाज का निर्माण करना ऐसा समाज जिसमें अस्पृश्यता, हिंसा, व्यभिचार, हैवानियत और अमानवीय अवगुणों का नाम नहीं हो। सुसंस्कृ



ति समाज में समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व भाव के साथ ही साथ एकता और अखंडता भी पायी जाती है।

अमन चैन सत्य, अहिंसा, पारस्परिक सहयोग की भावना विद्यमान होती है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। संस्कृति के द्वारा ही प्राणी में इन्सानियत और मानवीयता के गुण विद्यमान होते हैं। संस्कृति ही है जो मानव को बुद्धिमान, सुसंस्कृति और परोपकारी प्राणी बनाती है। इसलिए मानव एक अनोखा प्राणी कहलाता है। वह अनोखा इसलिए हो पाया है क्योंकि वह संस्कृति का आधिकारी तो है ही साथ ही निर्माता भी है। संस्कृति ही है जो मानव समाज को पशु समाज से पृथक् कर देती है। “मानव के पास से उसकी संस्कृति को छीन लीजिए जो कुछ शेष रहेगा वह निश्चित ही मानव नहीं अपितु एक प्रकार का बंदर होगा।”¹ संस्कृति से नैतिक आध्यात्मिक एवं बौद्धिक प्रगति समझते हैं। संस्कृति शब्द संस्कार का रूपांतरण है। एक हिंदू व्यक्ति को अपने जीवन को परिमार्जित करने के लिए बहुत से संस्कारों को अपनाना पड़ता है तथा उसके बाद वह कहीं सुसंस्कृति नागरिक कहा जाता है। एक देश का कलात्मक अथवा बौद्धिक विकास ही संस्कृत है संस्कृति सीखे हुए व्यवहार की वह समग्रता है जिसमें एक बालक का व्यक्तित्व पलटा और पनपता है श्री मेलिनोवस्की के अनुसार, “संस्कृति प्राप्त आवश्यकताओं की एक व्यवस्था तथा उद्देश्य मूलक क्रियाओं की संगठित व्यवस्था है।”² संस्कृति व्यक्ति को मानसिक एवं शारीरिक विशेषताओं की भांति अपने माता-पिता से वह इंसान आक्रमण के माध्यम से नहीं प्राप्त होती बल्कि वह जिस समाज में जन्म लेता है वही पर रहकर वह समाजीकरण की प्रक्रिया के आधार पर उसको सीखना है। हर मानव समाज की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति होती है। संस्कृति की प्रकृति वास्तव में सामाजिक होती है। यह किसी विशेष व्यक्ति या व्यक्तियों की धरोहर नहीं होती उसका विस्तार विस्तृत एवं सामाजिक होता है। संस्कृति किसी समाज की महत्वपूर्ण संपूर्ण जीवन विधि का नेतृत्व करने वाली होती है।

संस्कृति किसी व्यक्ति का व्यवहार प्रतिमान ना होकर पूरे महत्व संपूर्ण समूह का व्यवहार वर्तमान होती है। यह मानव की प्राण शास्त्रीय तथा सामाजिक दोनों ही तरह की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। समयानुकूल संस्कृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते रहते हैं। हर युग की मांग बदल जाती है। समय परिवर्तन के साथ-साथ लोगों की अनेक आवश्यकताएं पनपने लगती हैं। पुरानी आवश्यकताएं खत्म होती हैं और नई आवश्यकता है पैदा हो जाती हैं। यही संस्कृति का वास्तविक स्वरूप है। “संस्कृति एक अखंड व्यवस्था नहीं है। अनेक छोटी-छोटी इकाइयों से मिलकर संपूर्ण संस्कृति का निर्माण होता है। संस्कृति की इन इकाइयों या तत्वों को ही सांस्कृतिक तत्व कहते हैं।”³ संस्कृति संपूर्ण मानव में संपूर्ण



विकास का कार्य करती है । विश्व के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने की शक्ति भारतीय संस्कृति में निहित है । यह अखंड जनमानस तक फैली है । भारतीय संस्कृति अन्य देशों को भी जन कल्याण की प्रेरणा देने वाली है । “वैदिक ,उपनिषद, जैन ,बौद्ध और पौराणिक संस्कृति के सम्मिलित उत्कृष्ट उपादानों से बनी सनातनी संस्कृति एक हजार वर्ष की विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए आज तक टिकी रही और आज स्वतंत्रता की सांस ले रही है।”⁴

संस्कृति शब्द का अर्थ मानव के मन या आत्मा को विशुद्ध करने वाली सम्यक् कृति या चेष्टा है । हम कह सकते हैं कि ऐसे विचार और व्यवहार जिसे मानव जीवन सुंदर परिष्कृत और सुसंस्कृति बनते हैं तथा आत्मोन्नति हेतु गतिशील हो यही संस्कृति की विशेषता है । मानव की लौकिक, पारलौकिक सर्वाभ्युदय के अनुकूल आचार विचार ही संस्कृति है । भारतीय संस्कृति प्राचीनतम है । आध्यात्मिकवादी सहर्ष और धार्मिकता स्थायित्व कर्मवादी समन्वयवादी प्रवृत्तियों से उत्पन्न भारतीय संस्कृति में सत्य अहिंसा तथा परोपकार का विशेष महत्व है । ज्ञान विज्ञान,आशावादिता ,अवतारवाद, पुनर्जन, संस्कार और मोक्ष जैसे गुण भी भारतीय संस्कृति में समाहित हैं।यही वह गुण हैं जो भारतीय संस्कृति को विश्व की अन्य संस्कृतियों से पृथक् करते हैं और उसे अनोखा स्वरूप प्रदान करते हैं ।

सुसंस्कृति मानव परोपकार की भावना होती है । सामूहिक लोककल्याण की भावना समाहित होती है । “किसी जाति , समाज एवं देश की संस्कृति उन जीवन मूल्य पर आधारित होती है जिसे उस जाति समाज एवं देश के लोग न केवल मानते हैं अपितु अपने जीवन में उनका आचरण करते हैं।”⁵ भारतीय संस्कृति के गुणों में संस्कारों का विशेष महत्व है । कहा जाता है कि ,‘जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।’अर्थात् जन्म से सब शूद्र होते हैं किंतु संस्कारों के द्वारा द्विज उच्च होते हैं । ब्रह्म वर्चस्व की प्राप्ति हेतु विप्र का 5 वर्ष की आयु में ,बल प्राप्त के इच्छुक क्षत्रिय का 6 वर्ष की आयु में तथा धन के इच्छुक वेश्य का आठ वर्ष की आयु में उपनयन किया जाना चाहिए । (मनुस्मृति2:37) पारस्कर गृह सूत्र में उपनयन संस्कार की अंतिम सीमा ब्राह्मण के लिए 16वर्ष, क्षत्रिय के लिए 22 वर्ष तथा वेश्य के लिए 24 वर्ष बताई गई है । निर्धारित अवधि के उपरांत ब्रह्मचारी को द्विजत्व से पतित माना जाता है । भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि ‘भारतीय संस्कृति आकाश की तरह विशाल समुद्र की तरह अपार व्यापकता लिए हुए है । यह ज्ञान से पवित्र किसी को नहीं मानती है । भारतीय संस्कृति मानव जाति के सर्वांगीण कल्याण के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है । “लाखों



वर्ष प्रयास करने के बाद मनुष्य बर्बर जीवन का परित्याग कर सभ्य समाज को जन्म देने में सफल होता है। '6 भारतीय संस्कृति की इस विकास अवधि को पांच कालों में बांटा गया है—

1—पूर्व वैदिक काल या प्रागैतिहासिक काल

2—वैदिक काल।

3—वेदिकोत्तर काल

4—मध्यकाल और

5—आधुनिक काल या आज तक।

भारतीय संस्कृति का विकसित स्वरूप दिख रहा है। उसमें धर्म कर्म की प्रधानता मानव को पशुओं से पृथक् करती है और धर्मान्धता मानव मानव में वैमनस्यता उत्पन्न करती है। आहार, निद्रा, भय व मैथुन तो पशुओं में भी पाई जाती है। धर्म हमारा प्राण है। उसके सहारे हम जीवन यापन करते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जो की पुरुषार्थ, में धर्म की गणना उसका महत्व बताया गया है।

भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों में वर्ण व्यवस्था जो कि 'ऋग्वेद में वर्ण शब्द रंग या प्रकाश के अर्थ में आया है। कहीं-कहीं वर्ण का संबंध ऐसे जनगण से है जिनकी चमणी काली है या गोरी। तैत्तिरिय ब्राह्मण में ब्राह्मण देवी वर्ण का है और शूद्र आसुर्य वर्ण का है। '7 मनुस्मृति के 9 वें और 10 वें अध्याय में चारों वर्णों से संबंध वेद विधि विधान का विस्तार से वर्णन मिलता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णों के समान भारतीय शास्त्रों में चार आश्रमों की व्यवस्था की है जो है ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास मनुस्मृति में गृहस्थ आश्रम की श्रेष्ठता अधिक पुष्टि प्रमाणों से सिद्ध की गई है। गृहस्थ आश्रम बाकी तीनों आश्रमों का भरण पोषण करता है। समय के अनुसार चारों आश्रमों में परिवर्तन होते रहते हैं। ज्ञान वैराग्य मुक्त व्यक्ति परम गति को चाहता है तो वह ब्रह्मचर्य से ही सन्यास आश्रम में चला जाता है।

मानव जीवन में आयु, तेज, बल, बुद्धि, वीर्य, पुण्य, कीर्ति और परमेश्वर में प्रीति ये सब गुण ब्रह्मचर्य का पालन करने से प्राप्त होते हैं। इसका पालन करने से मानव में दिव्य शक्ति का संचार होता है। धर्म, अर्थ और काम ये त्रिवर्ग उपाय (साधन) हैं और चतुर्थ पुरुषार्थ अर्थात् मोक्ष उपेय (साध्य) है। 'मनुष्य जाति के लिए पालनीय 10 लक्षण वाले धर्म का निरूपण किया गया है। नैतिकता के रूप में इस आधुनिक काल में मान्यता प्राप्त है। ये हैं—धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध ये ही धर्म के 10 लक्षण या गुण हैं।



समाजवादी चिंतक आचार्य नरेंद्र देव ने भारतीय संस्कृति के तीन प्रमुख तत्वों की चर्चा की है। आपके अनुसार भारतीय संस्कृति का सबसे प्रमुख तत्व विभिन्न जीवन प्रणालियों में एकता और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समन्वय स्थापित करना है। दूसरा तत्व नैतिक व्यवस्था की स्थापना करना तथा आचरण की शुद्धता है। अपना ध्यान रखते हुए दूसरे का भी ध्यान रखना इसका मूल मंत्र है। “आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।” इसका तीसरा महत्वपूर्ण तत्व विश्व भावना है। ‘आत्मौ पम्येन सर्वत्र समं पश्यति’ और ‘वसुधैव कुटुंबकम्’ इसकी शिक्षा है। “8 भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का अध्ययन करके हम सभी प्राचीन संस्कृतियों के कालातीत तत्वों के स्थान पर न्यूनतम नैतिक मानवतावादी आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश करके एक समग्र विश्व संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं जिसमें सामूहिकता, समन्वय, लोककल्याण आध्यात्मिक विकास, एकता और अखंडता पायी जाती है।

भारतीय संस्कृति के मूल मानवीय तत्व मानव जीवन को पवित्र बनाने एवं समन्वय की भावना उत्पन्न करने में सक्षम हैं। भारत में बहुत से राजाध्वंसात्मक ऐसे हुए जिनके समय में भारतीय संस्कृति विकास की सर्वोच्च स्थिति प्राप्त कर विश्व में अपना झंडा बुलंद किया था जिनमें मौर्य सम्राटों के समय संपूर्ण भारत में एक चक्रवर्ती सम्राट साम्राज्य की स्थापना की कल्पना उत्पन्न हो चुकी थी। मौर्य सम्राट अशोक के समय भारतीय संस्कृति विकास के मामले में विश्व में सर्वोच्च स्थान रखती थी। सांस्कृतिक दृष्टि से सम्राट अशोक के समय भारत का सांस्कृतिक विकास चर्म पर था। कौटिल्य ने लिखा है, “सारी पृथ्वी ही एक देश है उसमें हिमालय से लेकर समुद्र पर्यंत जो सहस्रत्रयोजन विस्तृत प्रदेश है। वह एक चक्रवर्ती साम्राज्य का क्षेत्र है।” 9 भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि वैदिक काल से ही एक प्रभावशाली देश बनने के विचार विकसित होने लगे थे। बौद्ध युग में भारत में महाजनपदों और साम्राज्यों का विकास आरंभ हो गया था। गौतम बुद्ध के मानवतावादी विचारों का प्रभाव भारत के साथ-साथ विश्व के अन्य देशों जैसे तिब्बत, भूटान, जापान, चीन, श्रीलंका, थाइलैंड इत्यादि पर गहरा प्रभाव पड़ा है। भारतीय संस्कृति की खास विशेषता है कि सब मानव मानव एक थे। स्त्री पुरुष भेद समाप्त हो गया था। शिक्षा धर्म याचना में स्त्री पुरुष बराबर सहभागिता निभाने लगे थे किंतु भारतीय संस्कृति में दो प्रकार के तत्व हैं एक मानव जीवन को सकारात्मक दृष्टिकोण देने में सक्षम है और दूसरे प्रकार के तत्व नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं जिनके परिणाम स्वरूप अज्ञानता, अविद्या, अंधविश्वास, अमानवीय परंपराएं, कुप्रथाएं, संकुचित धार्मिक दृष्टिकोण तथा मिथ्या दार्शनिक सिद्धांतों के कारण ही तो आज आजादी के लम्बा समय बीत जाने के बाद भी भारत में निरक्षरता, भुखमरी, नशाखोरी, जुआ, लॉटरी



,सद्दा, जातिगत भेदभाव, छुआछूत, धर्मान्धता, बाल विवाह, शोषण, अत्याचार जैसी बुराइयां और गंदगियां समाज में व्याप्त हैं। यह सब नकारात्मक सांस्कृतिक तत्वों धृष्टिकोण का परिणाम ही हैं।

वास्तविकता तो यह है कि बड़े मंच पर अगली पंक्ति के पढ़े-लिखे शासक या प्रशंसक वर्ग के लोग देश की स्थिति को जैसे चाहे वैसे पेश करें किंतु देश की असलियत तो अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों के अंदर झांक कर देखने से पता चलता है। “किसी भी समाज और देश की संस्कृति एवं उसमें व्याप्त दोषों या अवगुण, त्रुटियों, बुराइयों और गंदगी को दूर करना सरल काम नहीं है। आज भारतीय समाज में व्याप्त यह दुर्गुण भारतीय संस्कृति के अभिन्न और आवश्यक अंग बन चुके हैं। फ्रांस में फ्रांसीसी क्रांति, इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति, रूस में साम्यवादी लाल क्रांति चीन में सफल रही साम्यवादी क्रांति, सांस्कृतिक क्रांति हमारे मन में आशा का दीप जलाकर हमें नवीन क्षितिज की ओर बढ़ने की प्रेरणा दे रही है। सांस्कृतिक क्रांति ही एक ऐसी प्रक्रिया है जो भारत का कल्याण कर सकती है।”¹⁰

भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर स्थापित करने हेतु भारतीय मानव समाज को परस्पर सहयोग की भावना को अंगीकार करके विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का नागरिक होने के नाते विश्व स्तरीय मानवीय जिम्मेदारियां निभानी चाहिए। नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनीतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य और लोकतांत्रिक मूल्यों का वैज्ञानिक तरीकों से अंगीकार करके समन्वय की भावना दैनिक जीवन में अपनानी होगी। कर भला होगा भला, परोपकारी प्रवृत्ति, अन्न दीप भव और चारित्रिक रूप से भी सशक्त बनकर भारतीय नागरिक विश्व मानव समाज में भारतीय संस्कृति की उपादेयता स्थापित कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति विश्व में अपनी बहुमूल्य पहचान बनाये हुए है। आज विषम परिस्थितियों में भी भारत में एकता और अखंडता विद्यमान है तो वह संस्कृति के ही कारण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1-डॉ रविंद्र नाथ मुखर्जी और डॉ भरत अग्रवाल: समाजशास्त्र की मूल अवधारणाएं, एस बी पी डी पब्लिकेशंस आगरा, वर्ष 2022, पृष्ठ 167
- 2-डॉ रविंद्र नाथ मुखर्जी और डॉ भरत अग्रवाल: समाजशास्त्र की मूल अवधारणाएं, एस बी पी डी पब्लिकेशंस आगरा, वर्ष 2022 पृष्ठ 167
- 3-डॉ रविंद्र नाथ मुखर्जी और डॉ भरत अग्रवाल: समाजशास्त्र की मूल अवधारणाएं, एस बी पी डी पब्लिकेशंस आगरा, वर्ष 2022 प्रय 169



GYANBODH

An International Multidisciplinary
Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792

Volume: 3

Issue: 2

March - April: 2026

- 4—श्री ब्रजबल्लभ द्विवेदी: भारतीय संस्कृति के मूल तत्व, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, वर्ष 2014 , पृष्ठ 9
- 5—डॉ सी के श्रीवास्तव : इतिहास एस बी पी डी पब्लिकेशंस हाउस आगरा, वर्ष 2023, पृष्ठ 2
- 6—डॉक्टर श्री राम गोयल: प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियां, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, वर्ष 2008 पृष्ठ 109
- 7—श्री ब्रजबल्लभ द्विवेदी भारतीय संस्कृति के मूल तत्व, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, वर्ष 2014, पृष्ठ 33
- 8—श्री लाल बहादुर शास्त्री: भारतीय संस्कृति के नए आयाम, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली वर्ष 1987
- 9—डॉक्टर सत्यकेत विद्यालंकार: प्राचीन भारत की शासन पद्धति और राजशास्त्र, श्री सरस्वती सदन नई दिल्ली वर्ष 2008 पृष्ठ 147
- 10—डा धर्म कीर्ति :सांस्कृतिक क्रांति क्यों क्यों और कैसे?, परम सत्य प्रकाशन नई दिल्ली वर्ष 2006 पृष्ठ 11